

DPN 6273

Title : निर्वाण संग्रह व घृतकंवर विधि NIRVĀNA SANGRAHA WA
GHRTA KAMVARA VIDHI

Run. No. 6964

Cat. No. 13

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 23.8 x 10

Folios 15

Lines (in a page) 10/9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्रश्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Rajendra Shrestha

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thya^ssaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॐ नमः श्री गुरुभ्यः ॥ ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि निर्व्वर्णमन्त्रमुत्तमं ॥
संग्रहायंमनुप्रेक्षं सारात्सारतरं महत् ॥ कुशिल्याय कुपुत्राय दादातल्पं नदृश्येत् ॥
कदाचिद्दीयते यस्य सिद्धिदाते नृष्वेतरः ॥ अथानिर्व्वर्णमन्त्रो निरूप्यते ॥

△ इति निर्वारिणसंग्रहः ॥ शुभम्

धृतकम्बरविधिः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ श्रीरत्नेश्वर सदाशिव महारक्षस्य धृतकम्बर विधिर्हितिरन्यते ॥

मकर संक्रान्तौ दिने ॥ धंकारिणा नो रसिय ॥

पिडा वयाव चाकृत पूजा याव धृतकाव ॥ धंकारि कंधत अति याये ॥

धवते धृतकाव धव २ द्वे वने ॥ ॥ इति धृतकम्बर विधिः ॥ ॥



15

10

5

0

5

10

15

20

25



2

2

[illegible]

10

2

निर्वाणसंग्रह
चतुर्कम्वनपुस्तकमिदं ॥

निर्वाणसंग्रह
चतुर्कम्वनपुस्तकमिदं ॥

२०
१ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ श्रीनरेश्वरसदागिवरुदाय कस्त्यघृतकमूलविधिलिखित ॥ मक
नसंकाकोदिन ॥ **थंकाविनासिय** ॥ हौं गिवरुदाय स्वाहा ॥ हौं विद्याय स्वाहा ॥ हौं विद्याय स्वाहा ॥
हा ॥ हौं आत्मरुदाय स्वाहा ॥ ॥ चन्द्रनादिरुषण ॥ कस्त्यान चरुलखजादत ॥ वासु ॥
॥ **उं अस्मादि** ॥ उं अस्मत् श्री ३ नरेश्वरसदागिवरुदाय कायवर्षवन्धनमकनसंकाकि
महापर्वलिघुताय प्रपूजाकर्तुं श्रीसूर्यायार्घ्यानमः ॥ उं उदयप्रभुवन्दे सन्दर्बद्वहिक
गवः ॥ दृष्टविश्वयसूर्याय ॥ पूर्यनमः ॥ **पूषराजनसु** ॥ **उं नमः शिवाय** ॥ का
यति ॥ उं सिद्धिप्रदुक्तियोरम् **सर्वप** ॥ श्री ३ नरेश्वरसदागिवरुदाय कायवर्षवन्ध
नमकनसंकाकि महापर्वलिघुताय प्रपूजानिमित्तार्थं कमधुलपूषराजनमस्तुनामि ॥
॥ **आत्मासर्ग** ॥ हौं आत्मनं दमासर्गनमः ॥ हौं आत्मनं पूर्यनमः ॥ **गुरुनमस्तु** ॥ उं
हौं अखण्डमधुलाकारमिति ॥ ॥ **तता आस** ॥ उं हः अस्माय रुद्र ॥ ३ ॥ उं हः दयाय

१०
नमः ॥ उं हौं गिवरुदाय स्वाहा ॥ उं हौं गिवरुदाय स्वाहा ॥ उं हौं कवचाय हौं ॥ उं हः अस्माय रुद्र ॥
तना प्र ॥ **वा** ॥ **यामः** ॥ **य** ॥ उं सद्योजाताय विद्मह्वामेदवाय धीमहि ॥ तन्नो
प्राच्युवाच द्याम् ॥ २१ ॥ **अर्चपाग** ॥ निगुनसर्ग ॥ निगुनयार्तलखन ॥ पकवाय जाकि
य ॥ अर्चपाग तये लखनय निगुलिर्ग ॥ **कवचभावगु** ॥ उं हौं कवचाय हौं ॥ **धन**
मूलादगय ॥ पूजाहलकाय सकलयी ॥ तलयार्तपूजाहलकावतलेसु पू
जायातकलकाय ॥ ॥ **अर्चपाग** ॥ निगुनसर्ग ॥ चरुस्वानतयोव हृदयादिनपूजा ॥ उं हौं
हृदयाय नमः ॥ उं हौं गिवरुदाय स्वाहा ॥ उं हौं गिवरुदाय स्वाहा ॥ उं हौं कवचाय हौं ॥ उं हः अ
स्माय रुद्र ॥ अर्चपागाय आवाहनादिवन्दनादुत्तपूर्य ॥ ॥ **चपुथा** ॥ **वा** ॥ **अर्चम** ॥
हलखनलय ॥ चलसर्वाहलखनलय ॥ दवस्त्रानयाचक ॥ उं स्वस्तिनामिमी
मति ॥ **यगु** ॥ **वा** ॥ **न** ॥ **सकल** ॥ **वा** ॥ **न** ॥ **रुप** ॥ **निस** ॥ ॥ **सा** ॥ **इ** ॥ उं पयः ॥ पृथिवी ॥
साधनि ॥ उं दधिकावो ॥ साधल ॥ उं गजासि ॥ कष्टि ॥ उं मधुवातामृता ॥ साखल ॥

ॐ गिवा नामासि ॥ **लखन लूय** ॥ ॐ स्वस्ति नमो ॥ ॥ **अनदकादयार्त** पंथामृतादिस्त्रा
 न लखनहाल ॥ दवकापलनहय ॥ ॐ वसा ४ पवित्रमसि ॥ **अदगन कृतकदव** ॥
 ॥ **धनधन** ॥ **धनयाय** ॥ पूतासन चाक कचाक चाय ॥ तायहाल लफ क कूटभा
 सनगय सिजलदनिम घलतय मव २ पूजालनया घलतय हासदकांतय कमीतया
 हामलतय सिजलदनिपातासन चायागुनिमगय ॥ ॥ **आयम** ॥ ॐ हां गिवत त्यायस्व
 हा ॥ ॐ हां विद्या त त्याय स्वाहा ॥ ॐ हां आत्म त त्याय स्वाहा ॥ ॥ **आस** ॥ ॐ ह ॥ **अमृताय**
 रुट ॥ ३ ॥ **रवीगन्यास** ॥ ॥ **धललखनहाय** ॥ ॐ ह ॥ **अमृताय रुट** ॥ **अवगुनी** ॥ ॐ
 हं कवचाय हं ॥ **धनमुद्रा** ॥ **धनयाय** ॥ ॐ हां हृदयाय नमः ॥ **धनधियावतय** ॥ ॐ सयाजा
 ताय विप्रह वामद वाय धीमहि ॥ तनाद्यान ४ पुवादयात ॥ ॐ हां अद्यान त्याथ घान त्याघान
 घान तनया ४ सर्वत ४ सर्वसर्व त्या हां स ४ नमस्तु ४ रूपं ते ४ क ४ हां हां हां ललितस्व रुन्द

महादेव वायनमः ॥ १४ ॥ १०८ ॥ **क्याऊलि** अद्यानमकुल ॥ ३ ॥ **हृदयादि** ॥ ॐ हां हृद
 यायति ॥ १ ॥ **धन** ॥ **धनयाहाव** उपासन चाकासन धकानिकथन धनजाय ॥ धनव
 हामलव नापवाताव महादवयालीगस गुन ॥ **वासु** ॥ ॐ वसु विष्णु गिवादिधु जिहारा
 र्कतइहनी ॥ सर्वपापविनिर्मुक्त सर्वसकानवर्द्धनी ॥ वर्षकाटिसहस्रय यस्यापममूपाः
 किंती ॥ घुताय अनलि अन देह सर्व नसंगय ॥ ॥ **रिनक** महादवया लीगस गुन
 ॥ ॐ **धन** स वाह महादवया कंतय ॥ धलविताय लनक ॥ पूजालनयात ॥ पूजालनः
 हाहाव धलतयाव तलस दवसकल पूजायाय ॥ स्वानकाकायाव कानहय ॥ महा
 दवया आखस ॐ धनयात पूतासन चाकचायाव तायहाल लफ कूटगायाव वजिहा
 यातय ॥ धनधूनकाव महादवयात वन्दनादितय ॥ ॥ **वन्दन** ॥ ॐ यदयकवृष्टहं ॥
 सिद्ध ॥ ॐ लयविष्टा ॥ **अदग** ॥ ॐ दीर्घायुत्वा ॥ यहापवीत ॥ ॐ यहापवीत ॥ पूषा ॥

[illegible]

ॐ कौं नैऋत्याय २॥ ॐ कौं वरुणाय २॥ ॐ कौं वायवे २॥ ॐ कौं क्रूराय २॥ ॐ कौं ॐ नमनाय न
मः ॥ ॥ कृतावकु पूजनं ॥ ॐ कौं ॐ नमनाय नमः ॥ ॐ कौं यैः सुखाय पूर्वव
क्राय २॥ ॐ कौं नैऋत्याय दक्षिणवक्राय २॥ ॐ कौं वैवामदवाय उत्तरवक्राय २॥ ॐ कौं ले
सद्याजाताय पश्चिमवक्राय नमः ॥ ॐ निवक्र पूजा ॥ ॥ अवाहनादि चन्दनादित्पूर्य २
॥ ॥ धूपः ॥ ॐ धूपसि धूर्त्त ॥ दीपः ॥ ॐ दीपसि धूर्त्त ॥ नवम्य ॥ ॐ यागि ॥ ॐ यागि ॥ ॐ यागि ॥ ॐ यागि ॥
ॐ हनुकादि अष्ट द्वापा लाय वलिगृह २ स्वाहा ॥ ॐ सर्वयागिनी लाय वलिगृह २ स्वाहा ॥
पतिष्ठा ॥ ॐ मनाहूति ॥ ॥ मधुलजप ॥ ॐ सद्याजाताय नमः ॥ १०॥ जप समर्पयामि ॥
लिङ्गमूर्ध्नि वक्ष्ये नमस्कृत्य ॥ ॥ सार्धं च ध्यायेत् ॥ ॐ पाताल वाक निरुद्धादि गणुवन स
र्वगोल समुद्र लसका वृक्ष लाहादि लिङ्ग लपवन स्कावन उगमवा वीज सर्वोपधाना मस्तु स
नग ॥ ॐ सर्वपणक ॥ ॐ सर्वश्यापी निवार्य सकल निवमया नाश दवादि नीय ॥ ॐ याथा

किं धना कविश्वमखिलं विश्वं कियददिका वप्राग्नेत्याख उगमवक्रुदिलाष दुक्कगर्हप
ना ॥ ॐ नानन्दविकागिनं कनमि कक्षाफ ॥ निवायागि व ॥ स्वातन्त्र्य ॥ गमिलेन वारुवरवाः
विश्वमृतालेन व ॥ ह्वाकास्मात्तवान ॥ ॥ श्रीनलेश्वर सदागिवर दानकाय वर्षवन्धनम
कनसंकाकिमहापर्वलिष्टगात्यं पूजानिमित्तार्थं अग्न्यादि ॥ मुखवायं ॥ सर्वलिङ्गः
मूलाद्यर्ग्यं ॥ दद्यात्तदक्षिणाय ॥ धनार्थं कानि कथनं दवजाय ॥ ॥ दवागीर्वा ॥ ॐ
यातन्त्र ॥ अर्चपाशादकना स्मार्तिवर्क ॥ ॐ स्वस्ति न ॥ ॐ स्वा ॥ चन्दन ॥ ॐ यदद्य कच वृह ॥
सिद्ध ॥ ॐ त्रैलोक्यविष्टदा ॥ मधुलयास्नानकाय ॥ ॐ वृक्ष लस्य ॥ मधुलयास्नानन कुप ॥
विनाय पूजा लसतय ॥ ॥ मधुलविस्तर्जनं ॥ शालिकाय ॥ अर्चपाश सवाहस्नाने वः
लिमतय ॥ ॐ हां धनि शुभुय ह्वाहा ॥ ॥ सूर्यासाक्षिभय ॥ ॐ अस्मत् श्रीनलेश्वर
सदागिवर दानकस्य वर्षवन्धनम कनसंकाकिमहापर्वलिष्टगात्यं पूजासंपूर्णार्थं कृतक

मर्म १४ साक्षि १८ श्रीसूर्यायार्घ्यनमः ॥ पूर्णनमः ॥ ॥ **आवृत्त** ॥ ॐ ह्रीं गिव तत्त्वायः ॥
 स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विद्या तत्त्वाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं भूत तत्त्वाय स्वाहा ॥ ॐ विष्णु ३ ॥
 उपासनवाकासु धलगतय ॥ पूजातलसु, कृयादवयाग ॥ तलैयास्त्रानकाय ॥ मधु
 लयास्त्रान, पूजातलपतिगतय ॥ ॥ विहावयाव, वाकलपूजायाय धूनकाव ॥ थ
 कारिकथन अनियाय ॥ धरतधूकाव, थवर, कवन ॥ ॥ **ॐ तिष्ठत कीव न विधिः** ॥

१८ **चतुर्कम्बन** ॥ ॐ नमानायाय हाहनि ॥ ॐ लाक्ष्मिपतिवतु ॥ पूजसकतिमद
 हि, सुप्रसन्नाजनाईन ॥ ॥ **गुरु** ॥ ॥ **वितान इक वा** ॥ आदीपवृगद्यानसिधन
 ॥ **धूपनपर्व** ॥ वितानेसितपद्मार्त, मधुपर्वकृत्तुषित ॥ विविगुमकवर्णुवा, नववक्त्र
 पण्णहित ॥ किंकिणीनवकायत, कन्दके, पण्णहित ॥ कृत्तिकापनियादद्या, सुनगावा

विकल्पयत् ॥ नृदवत्सर्वलाकषू, युगकाटिममादत ॥ ॥ **ॐ भूयः** ॥ **चतुर्वाहा** ॥
अथादि ॥ अमूक एव अमूक नाम श्रीमच्छ्री श्रीनलं च नमदागिवपीत्यर्थ ॥ मूलमनु
 ४ ॥ श्रीनलं च नमदागिवरुहानकाय ॐ देतु विनिर्मितनवीनं वितानं विष्णुदेवतमहेश
 शोकयामिनमः ॥ दक्षिण ॥ **ॐ ति** ॥ ॥ **चतुर्कम्बन** यातालरातकथन ॥ आचारण
 धूकृ, सकल्यवाघराहपनिहातक ॥ सति कृ, इनपीनसासखिन, वथलगाय
 पागाय, ॐ गाल, ऊजमका, सिद्धाय धूप, पूजातलरु, सिद्धनवतस्त्रान, रुका, धलः
 कृ ३ १ हामलकृ ३ १ पात ८ साइइ, साधलि, पंचामृत, रु १ उरु, कृ १ बालइसा ॥
 लफं कृ ८ मालका, वजिहोया, रु १ निष्ठाव, ससाधकि, ग्वाल, गव, दक्षिण ॥ पा १ सि
 जलदनि, आगमसकाय, घटहयमूमान, अकत ॥ धरत उपचारं रुगा ॥ ॥ **दवगुहा** धल
 शाकूलिवकाकाय, आचारयात, निसगाव, ससाधकि, लूहाधनि, विष ॥ **दवयाग** कृयादकि

॥ नृदवत्सर्वलाकषू ॥